International Journal of Economic Perspectives,*16*(6), 129-146
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

लखनऊ शहर की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं और उनके बच्चों का जनसांख्यिकीय विश्लेषण

शोध छात्र- **उमेश चन्द्र पाण्डेय**[1]
शोध निर्देशक- **डॉ आशीष यादव,**[2] उपकुलसचिव, विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र विभाग,
स्वामी विवेकानंद यूनिवर्सिटी, सागर, मध्यप्रदेश[1,2]

प्रस्तावना

शहरी क्षेत्रों में मलिन बस्तियों के समूह में तेजी से वृद्धि शहरी गरीबों की संख्या में वृद्धि दर्शाती है जो स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों के लिए एक चुनौती है और यह एक गहन और विस्तृत जांच के योग्य है। लखनऊ की लगातार बढ़ती आबादी के साथ शहरी आबादी पर रहने वाले गरीबों का असर अब बढ़ती चिंता का विषय बन गया है। इसलिए, यह सबसे महत्वपूर्ण है कि शहरी निवासियों की तेजी से बढ़ती संख्या , विशेष रूप से शहरी स्लम क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं प्रदान करने का प्रयास करना चाहिए। यह अनिवार्य है कि औपचारिक स्वास्थ्य क्षेत्र को उपेक्षित और हाशिए पर रहने वाली झुग्गी आबादी द्वारा सामना की जा रही स्वास्थ्य समस्याओं के व्यापक स्पेक्ट्रम को संबोधित करना चाहिए। वर्तमान अध्ययन उत्तर प्रदेश के लखनऊ जिले की मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं और उनके बच्चों का जनसांख्यिकीय विश्लेषण करने का एक प्रयास है। अध्ययन का मलिन बस्तियों में जनसांख्यिकीय रूपरेखा और सामाजिक-आर्थिक समस्याओं के पूरे स्पेक्ट्रम पर ध्यान केंद्रित है और इससे नीति निर्माताओं को झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों पर जोर देने के साथ विशेष कार्यक्रम तैयार करने के लिए उपयोगी ज्ञान की सुविधा होगी। वर्तमान अध्ययन उनके सामाजिक-आर्थिक स्थिति को समझने में एक नया आयाम प्रदान करेगा और यह मौजूदा ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान देगा।

परिचय

भारतीय जनसांख्यिकी की एक प्रमुख विशेषता तीव्र और अनियोजित शहरीकरण है। भारत की शहरी जनसंख्या कुल जनसंख्या का 31.16 प्रतिशत है (भारत की जनगणना, 2011) शहरीकरण की प्रक्रिया संक्रमण का एक शुभ संकेत है, हालांकि अनियोजित और तेजी से शहरीकरण के कारण बड़े पैमाने पर आबादी का शहरों की ओर पलायन होता है , जिसके परिणामस्वरूप अक्सर अमानवीय और जीर्ण -शीर्ण जीवन स्थितियों (डेविस, 2006) की विशेषता वाली मलिन बस्तियों का विकास होता है। इसके अलावा , शहरीकरण भी जटिल रूप से सामाजिक आर्थिक समस्याओं की संख्या से जुड़ा हुआ है।इनमें से कुछ प्रमुख समस्याएं बेरोजगारी , गरीबी, भीड़भाड़, भीड़भाड़, आवास की कमी, अपर्याप्त नागरिक सुविधाएं जैसे सुरक्षित पेयजल की कमी , शौचालय की सुविधा, स्वच्छता, सीवेज आदि हैं। ये समस्याएं सीधे स्वास्थ्य और गुणवत्ता की उपलब्धता से जुड़ी हैं। शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएं। हालांकि , गरीबी और पर्याप्त आवास स्थितियों की कमी अनियोजित शहरीकरण का सबसे बुनियादी और प्राथमिक उपोत्पाद है। शहरों में गरीबी का सबसे स्पष्ट आयाम उचित आवास और रहने की स्थिति की कमी है। शहरों में रोजगार के बढ़ते अवसरों और अवसरों के कारण , शहरी क्षेत्रों में जनसंख्या का भारी प्रवाह होता है। नतीजतन, शहरों में निचले आर्थिक स्तर के लोग यानी शहरी गरीब खुद को घटिया आवास, अवैध बस्तियों और मलिन बस्तियों में समायोजित करने के लिए मजबूर हैं। इसलिए , भारत में शहरीकरण के अभिन्न घटकों में से एक मलिन बस्तियों का विकास है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

एक स्लम को आमतौर पर एक आवास इकाई के रूप में माना जाता है जो कि दोषपूर्ण और दोषपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, भौतिक, आवास और रहने की स्थिति की विशेषता है। यूएनहैबिटेट रिपोर्ट (2003) ने स्लम में एक घर को "एक ही छत के नीचे रहने वाले व्यक्तियों के एक समूह के रूप में परिभाषित किया है और एक या एक से अधिक बुनियादी आवश्यकताओं की कमी है जैसे कि सुरक्षित पेयजल , शौचालय की सुविधा और स्वच्छता, पर्याप्त स्थान और आवास क्षेत्र , और कार्यकाल की सुरक्षा "। मलिन बस्तियों और अवैध बस्तियों की परिभाषा और अवधारणा प्रत्येक समाज में प्रचलित सामाजिक-आर्थिक और पर्यावरणीय परिस्थितियों के आधार पर अलग-अलग देशों में भिन्न होती है। भारत सरकार (चंद्रमौली, 2003) ने मलिन बस्तियों की कुछ बुनियादी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है और ये विशेषताएं हैं जीर्ण -शीर्ण आवास, अपर्याप्त प्रकाश व्यवस्था और खराब वेंटिलेशन, तीव्र भीड़भाड़ और भीड़भाड़ , सुरक्षित पानी की कमी और शौचालय की सुविधा , स्वच्छता का अभाव और सामाजिक सेवाओं की अनुपलब्धता।

महिलाओं के स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति का सीधा संबंध उनके बच्चों से है। खराब सामाजिक - आर्थिक स्थिति के कारण मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं को हर आयाम में समझौता करना पड़ा। उचित पूर्व और प्रसवोत्तर देखभाल की कमी माताओं के शारीरिक भंडार पर दबाव डालती है। झुग्गी -झोपड़ियों में अपर्याप्त और गरीब बच्चों के पालन-पोषण की प्रथा एक सामान्य घटना है। बाल्यावस्था के दौरान दोषपूर्ण आहार पद्धतियों के परिणामस्वरूप कुपोषण होता है जो मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के शारीरिक , मानसिक और सामाजिक विकास को प्रभावित करता है।

इस अध्ययन में हम सामाजिक-आर्थिक स्थिति के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं जिनका महिलाओं और उनके बच्चों के स्वास्थ्य की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। स्वास्थ्य समानता प्राप्त करने के लिए, यह आवश्यक है कि शहरी गरीबों के रहने और आवास की स्थिति को समतल किया जाए। इसके अलावा , विभिन्न सामाजिक रूप से बहिष्कृत और वंचित समूहों की कमजोरियों और विभेदक जोखिम को कम करने की आवश्यकता है। किसी भी सामाजिक समूह के लिए , उसकी स्वास्थ्य स्थितियों का सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के साथ जटिल अंतर्संबंध होता है। यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि झुग्गीवासियों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के पास एक सभ्य जीवन शैली जीने के लिए संसाधनों और अवसरों की गंभीर कमी है। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली महिलाएं शुरू से ही स्वस्थ और संपन्न जीवन से रहित होती हैं और साथ ही उन्हें अपने परिवार की देखभाल करनी होती है और बड़ी जिम्मेदारियों को निभाना होता है।

साहित्य की समीक्षा

प्रजापति, बेनकर, सोलनिया, तलसानिया, मुखर्जी और त्रिवेदी एट अल (2011) ने अपने लेख "भुज , गुजरात, भारत के शहरी स्लम क्षेत्र में बुनियादी नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता पर एक अध्ययन" में बुनियादी नागरिक सुविधाओं की उपलब्धता का विश्लेषण किया। मलिन बस्तियों में उनके अध्ययन से पता चला कि लगभग आधे घर (50.4 प्रतिशत) स्थायी थे और शेष घर अस्थायी रूप से प्लास्टिक की चादरों से बने थे। इस अध्ययन ने बुनियादी ढांचागत सुविधाओं की कमी और नगर नियोजन रणनीति के अपर्याप्त कार्यान्वयन की ओर इशारा किया। तबस्सुम (2011) ने अपनी पुस्तक "स्लम्स इन इंडिया" में उत्तर प्रदेश में प्रतापगढ़ जिले की शहरी मलिन बस्तियों में झुग्गी-झोपड़ियों के निवासियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति और आवास की स्थिति के बारे में पता लगाया। इस अध्ययन से पता चला कि कुल साक्षरता दर 56 प्रतिशत थी जिसमें पुरुष साक्षरता दर (65 प्रतिशत) महिला साक्षरता दर (46 प्रतिशत) से अधिक थी। इसके अलावा यह पाया गया कि लगभग 24.14

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

प्रतिशत झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले काम कर रहे थे , हालांकि इनमें से 60 प्रतिशत दिन के काम की प्रकृति से अनजान थे। आवास की स्थिति बहुत खराब थी और अधिकांश झुग्गीवासियों को आवास की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। लगभग 46.34 प्रतिशत कच्चे घर मिट्टी , प्लास्टिक और बांस से बने थे। झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के पास सुरक्षित पेयजल और शौचालय की कमी थी केवल 20 प्रतिशत घरों में ही शौचालय की सुविधा थी और बाकी के घर खुले में शौच कर रहे थे। कूड़े के निस्तारण की पर्याप्त सुविधा नहीं होने के कारण बच्चे वायरल संक्रमण, फोड़े, बुखार आदि से पीड़ित हो गए।

बादामी, (2012) ने अपने काम में "बगलकोट की शहरी मलिन बस्तियों में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की पोषण स्थिति" में बागलकोट की शहरी मलिन बस्तियों ने बच्चों में कुपोषण के प्रसार का अनुमान लगाने के लिए एक अध्ययन किया। उन्होंने देखा कि पुराने कुपोषण की व्यापकता बहुत अधिक थी , जबकि तीव्र कुपोषण की व्यापकता अपेक्षाकृत कम थी। लगभग 72.65 प्रतिशत , 65.49 प्रतिशत और 32.05 प्रतिशत बच्चे क्रमशः अविकसित, वेस्टेड और कम वजन वाले थे। अध्ययन से पता चला कि 7-12 महीने और 55-60 महीने के आयु वर्ग में कुपोषण की व्यापकता अधिक पाई गई। इस अध्ययन ने सुझाव दिया कि इष्टतम शिशु स्तनपान और दूध छुड़ाने की प्रथाएं, बच्चे का समय पर टीकाकरण और बच्चों में बीमारियों का उचित उपचार शुरू करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, बाल कल्याण कार्यक्रम इस तरह से तैयार किए जाने चाहिए कि प्राथमिकताएं पांच साल से कम उम्र के बच्चों को आवंटित की जानी चाहिए।

कुलकर्णी, खान और चंद्रशेखर (2012) ने अपने लेख "दक्षिण भारतीय शहर में शहरी झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों के बीच स्व-दवा प्रथाओं" में हैदराबाद के एक शहरी स्लम समुदाय में स्व-दवा प्रथाओं के बारे में ज्ञान और धारणा का पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया। अध्ययन में बताया गया है कि लगभग 30.5 प्रतिशत झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों ने स्व-दवा का अभ्यास किया। झुग्गी-झोपड़ी में रहने वालों में से अधिकांश (77.7 प्रतिशत) ने स्व-दवा के लिए एलोपैथिक दवाओं का इस्तेमाल किया। अध्ययन ने सुझाव दिया कि शहरी स्लम समुदाय को स्व-दवा के अभ्यास को बंद करने के बारे में शिक्षित करने की तत्काल आवश्यकता है , क्योंकि इससे उनके स्वास्थ्य पर गंभीर असर पड़ सकता है।

कैरोलिन और यात्ज़िमिर्स्की (2013) ने अपनी पुस्तक "धारावी: मेगा स्लम टू अर्बन पैराडाइम" में 20 साल के श्रमसाध्य फील्डवर्क को एक साथ लाया और धारावी को परिभाषित करने वाली सामाजिक , आर्थिक, राजनीतिक और शहरी जटिलताओं का खुलासा किया। इस पुस्तक ने झुग्गी-झोपड़ी के इतिहास का एक दुर्लभ विवरण प्रदान किया है, जिसमें चमड़े के श्रमिकों की मूल आबादी पर विशेष जोर दिया गया है- जो इसकी शहरी अनौपचारिक अर्थव्यवस्था, उनके काम, संगठन और बढ़ती राजनीतिक जागरूकता की रीढ़ हैं। यह पुस्तक वैश्विक बाजारों के लिए एक अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के सफल अनुकूलन के माध्यम से एक समृद्ध व्यापार केंद्र में मेगा-स्लम के क्रमिक परिवर्तन का पता लगाती है, जो बदले में एक शहरी प्रतिमान स्थापित करता है।

गोस्वामी और मन्ना (2013) ने अपने लेख "झुग्गियों में रहने वाले शहरी गरीब: भारत में रायपुर शहर का एक केस स्टडी" में रायपुर शहर की शहरी मलिन बस्तियों में रहने की स्थिति और जीवन की गुणवत्ता का अध्ययन किया। उन्होंने जोर देकर कहा कि शहरी गरीबों को लगातार बढ़ती आबादी, खराब और अस्वच्छ रहने की स्थिति और जीवन की गुणवत्ता में गिरावट के कारण खतरा है। मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों में कुपोषण की घटनाएं विशेष रूप से अधिक हैं। लाख कोशिशों के बाद भी मलिन बस्तियों की स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। इस बात की तत्काल आवश्यकता है कि स्लम आबादी को लक्षित करने के लिए अधिक विशिष्ट कार्यक्रम तैयार किए जाने चाहिए।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

चिन्नाकली, उपाध्याय, शौकीन, सिंह, कौर, सिंह, गोस्वामी, यादव और पांडव (2014) ने अपने लेख "भारत के पांच महानगरीय शहरों में बच्चों के विकास और विकास पर सामाजिक-आर्थिक अंतर का प्रभाव" में एक अध्ययन किया। घरों में खाद्य असुरक्षा की व्यापकता का आकलन करने के लिए दक्षिणी दिल्ली की एक शहरी पुनर्वास कॉलोनी में और स्लम में खाद्य सुरक्षा के अस्तित्व को प्रभावित करने वाले कारक। उन्होंने पाया कि लगभग 77.2 प्रतिशत परिवार खाद्य असुरक्षित थे , जिनमें से 9.2 प्रतिशत परिवार गंभीर रूप से खाद्य असुरक्षित थे। उन्होंने देखा कि भोजन संभालने वाली महिलाओं का शिक्षा स्तर जितना अधिक होता है और घर में कमाने वाले सदस्यों की संख्या उतनी ही कम होती है , घर में खाद्य असुरक्षित होने की संभावना कम होती है। इस अध्ययन से पता चला है कि समाज के कमजोर वर्गों में खाद्य असुरक्षा की व्यापकता उल्लेखनीय रूप से अधिक थी।

सज्जाद (2014) ने अपने लेख "कम भाग्यशाली स्लम निवासियों के जीवन स्तर और स्वास्थ्य समस्याएं: एक भारतीय शहर से साक्ष्य" में स्लम स्थिति सूचकांक (स्लम) का उपयोग करके झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले व्यक्तियों की सापेक्ष रहने की स्थिति और स्वास्थ्य की स्थिति का आकलन किया। स्लम सीआई पर आधारित विश्लेषण से पता चला है कि इसके चार घटकों में व्यापक असमानताएं मौजूद हैं। विश्लेषण से पता चला कि गैर-अधिसूचित मलिन बस्तियों ने घरेलू पर्यावरणीय स्थिति पर सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य स्थितियों में उच्च औचित्य की मांग की। अध्ययन ने सुझाव दिया कि स्लम स्थिति सूचकांक पर आधारित दृष्टिकोण का उपयोग मलिन बस्तियों में रहने की स्थिति की स्थिति का आकलन करने और तदनुसार स्वस्थ शहर के लिए समग्र ढांचा विकसित करने के लिए किया जा सकता है।

मिरेकल, रूथ, ग्लोरी एंड जॉनसन (2015) ने अपने लेख "स्लम में महिलाएं उनके स्वास्थ्य , अर्थव्यवस्था और पर्यावरणीय पहलुओं" में हैदराबाद की एक शहरी झुग्गी बस्ती में महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति पर सामाजिक-आर्थिक स्थितियों के प्रभाव का विश्लेषण किया। इस अध्ययन से पता चला कि परिवारों की कुल आय में महिलाओं का योगदान 40 प्रतिशत था। अधिकांश महिलाएं फूस के , भीड़भाड़ वाले घरों में रह रही थीं और उनके संयुक्त परिवार थे। इसके अलावा उनमें से अधिकांश के पास अलग रसोई , सुरक्षित पेयजल, शौचालय की सुविधा और जल निकासी व्यवस्था तक पहुंच का अभाव था। इन सभी कारकों का महिलाओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, क्योंकि उन्होंने घरेलू गतिविधियों को करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।इसने महिलाओं को शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से तनाव के विभिन्न स्तरों से अवगत कराया , क्योंकि उन्होंने उत्पादन और प्रजनन की दोहरी भूमिका निभाई जो उनके स्वास्थ्य के लिए खतरा है।

पटेल, बंसल, ए.जी. निंबालकर, फाटक, एस.एम. निंबालकर, देसाई (2015) अपने लेख "स्तनपान प्रथाओं, जनसांख्यिकीय चर, और बच्चों में रुग्णता के साथ उनका जुड़ाव" ने गुजरात के आणंद जिले में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की माताओं के बीच स्तनपान प्रथाओं का आकलन करने के लिए एक अध्ययन किया। सांख्यिकीय विश्लेषण से पता चला कि प्रसव के एक घंटे के बाद स्तनपान शुरू करना , छह महीने से पहले केवल स्तनपान की प्रथा को बंद करना, मातृ शिक्षा का निम्न स्तर, दो से अधिक बच्चे होने और परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा प्रदान किए गए पूरक भोजन ने रुग्णता की दर में वृद्धि की। इस प्रकार , अध्ययन ने सुझाव दिया कि माताएं अनुचित तरीके से स्तनपान करा रही थीं और इन प्रथाओं को सुधारने के लिए हस्तक्षेप की आवश्यकता थी।

मारीमुथु, कनमनी और सौम्या (2016) ने अपने लेख "भारत के पांच महानगरों में बच्चों के विकास और विकास पर सामाजिक-आर्थिक अंतर का प्रभाव" में यह विचार रखा कि माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

स्थिति थी बच्चे का यह वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उन्होंने एनएफएचएस -3 डेटा का उपयोग करते हुए भारत के पांच महानगरीय शहरों (दिल्ली , मुंबई, कोलकाता, चेन्नई और हैदराबाद) में गैर-झुग्गी बस्तियों में रहने वाले बच्चों के साथ मलिन बस्तियों में रहने वाले बच्चों के विकास पैटर्न की तुलना की। उच्च जीवन स्तर की श्रेणी में आते हैं।सांख्यिकीय विश्लेषण से पता चला कि जीवन स्तर के आधार पर गैर-झुग्गी-झोपड़ी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों की तुलना में झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाले बच्चों की मानवशास्त्रीय स्थिति में महत्वपूर्ण अंतर था। इस प्रकार, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि माता-पिता की सामाजिक आर्थिक स्थिति बच्चों की वृद्धि और विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है और निवास स्थान की कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं होती है।

दासगुप्ता, सरकार, चौधरी, रे और शाहबाबू (2016) ने अपने लेख "कोलकाता में एक झुग्गी की प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया और इसके निर्धारक: कोलकाता की एक झुग्गी में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के बीच एक फोकस समूह चर्चा" आयोजित की। कोलकाता की शहरी मलिन बस्तियों में प्रजनन आयु की महिलाओं में एनीमिया के लिए जिम्मेदार निर्धारकों का पता लगाने के लिए एक अध्ययन। इस अध्ययन से पता चला है कि सामाजिक आर्थिक कारक जैसे निम्न शैक्षिक स्तर , गरीबी, कम आय, सामाजिक लापरवाही, खराब आहार की आदतें, अनुचित स्वच्छता प्रथाएं, कृमि संक्रमण महिलाओं में एनीमिया की व्यापकता से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े थे। खराब स्वास्थ्य वितरण प्रणाली, आयरन सप्लीमेंट की कमी और स्वास्थ्य कर्मियों के अपर्याप्त प्रशिक्षण से यह स्थिति और भी खराब हो गई। अध्ययन ने सुझाव दिया कि स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के ज्ञान और क्षमता में सुधार के साथ-साथ आयरन और फोलिक एसिड की गोलियों के पर्याप्त पूरक के साथ-साथ खाद्य सुरक्षा और उचित आहार सेवन से संबंधित महिलाओं की जागरूकता बढ़ाने से एनीमिया के बोझ को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है।

रहमान और मेधी (2017) ने अपने लेख "जोरहाट नगरपालिका, असम, भारत की शहरी मलिन बस्तियों में प्रसवपूर्व सेवाओं का उपयोग और इसे प्रभावित करने वाले समाजशास्त्रीय कारकों" में प्रसवपूर्व देखभाल के उपयोग का आकलन करने के लिए असम की शहरी मलिन बस्तियों में एक अध्ययन किया। सेवाओं और मलिन बस्तियों में इसे प्रभावित करने वाले सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारकों का विश्लेषण। इसने सुझाव दिया कि शिक्षा ने प्रसवपूर्व देखभाल सेवाओं के उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। एकल परिवारों में 19.2 प्रतिशत की तुलना में संयुक्त परिवारों में 4.8 प्रतिशत महिलाओं के पास कोई प्रसवपूर्व देखभाल सेवा नहीं थी। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रसवपूर्व देखभाल सेवाओं के उपयोग में उम्र , धर्म, महिलाओं की जाति और समानता की कोई प्रमुख भूमिका थी।

घाने और कुमार (2017) ने अपने लेख "मुंबई उपनगरीय क्षेत्र के पांच साल से कम उम्र के बच्चों की पोषण स्थिति" में पांच साल से कम उम्र के बच्चों की पोषण स्थिति की जांच करने और पोषण की स्थिति के साथ सहसंबंध का विश्लेषण करने के लिए एक क्रॉस-सेक्शनल अध्ययन किया। सांख्यिकीय विश्लेषण से पता चला कि सामाजिक-आर्थिक स्थिति और सामाजिक-जनसांख्यिकीय कारक कुपोषण से महत्वपूर्ण रूप से जुड़े थे। उन्होंने कहा कि गुणवत्तापूर्ण प्रसवपूर्व देखभाल प्रदान करना और सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करना बच्चों के बीच कम वजन को कम करने में प्रभावी साबित हो सकता है।

अलाज़ी डीए, अगाना जीए (2020) ने क्षेत्र में मलिन बस्तियों के स्वास्थ्य प्रभाव की व्याख्या करने वाले विषयों की पहचान करने के लिए 40 अध्ययनों का विषयगत विश्लेषण किया। किफायती आवास प्रावधान , रोजगार सृजन और सामुदायिक सामंजस्य जैसे क्षेत्रों में केवल कुछ ही अध्ययन झुग्गी-झोपड़ियों और स्वास्थ्य के

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

बीच लाभकारी संबंध का सुझाव देते हैं। हम तर्क देते हैं कि मलिन बस्तियों के पर्यावरणीय जोखिमों पर साहित्य का अत्यधिक जोर एक नवउदारवादी शहरी एजेंडे में शामिल है जो स्वास्थ्य के लिए उनके लाभकारी योगदान की कीमत पर मलिन बस्तियों को साफ करना चाहता है। तदनुसार, हम झुग्गी-झोपड़ियों के स्वास्थ्य जोखिम के रूप में स्थिर लक्षण वर्णन से स्वास्थ्य-प्रचार एजेंडे के लिए नीतिगत प्रवचन में बदलाव की वकालत करते हैं जो झुग्गी आबादी के आवास और सेवा अधिकारों पर जोर देता है।

फरहाद नोसराती नेजाद एट अल। (2021) ने स्लम निवासियों के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों के महत्व को देखते हुए , इन निर्धारकों के मुख्य आयामों और घटकों की पहचान करने के उद्देश्य से यह अध्ययन किया गया था। स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारकों पर जानकारी निकालने के लिए तैंतीस लेखों का चयन किया गया। लेखों की समीक्षा करने के बाद , 7 मुख्य आयाम (आवास , परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति, पोषण, पड़ोस की विशेषताएं, सामाजिक समर्थन और सामाजिक पूंजी, व्यावसायिक कारक और स्वास्थ्य व्यवहार) और 87 घटकों को स्लम में रहने वालों के बीच स्वास्थ्य के सामाजिक निर्धारक के रूप में निकाला गया।

सुडोडा पोंगुट्टा एट अल। (2021) ने बैंकॉक के स्लम निवासियों पर COVID-19 के प्रकोप के सामाजिक प्रभाव और नकारात्मक प्रभावों को दूर करने के लिए नागरिक समाज संगठनों (CSO) की पहल की जांच की। 900 प्रतिभागियों में से , 25.9% ने लॉकडाउन के दौरान अपनी नौकरी खो दी और 52.7% ने अपनी आय खो दी। नौकरी और आय के नुकसान ने प्रतिभागियों के भीतर गरीबी दर को 51.6% से बढ़ाकर 91.7% कर दिया। CSO ने भोजन, उत्तरजीविता किट, नौकरी और COVID-19 परीक्षण तक पहुँच प्रदान करके पीड़ितों को राहत देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी चपलता , कौशल और मलिन बस्तियों के बारे में ज्ञान , और सामाजिक पूंजी ने संकट की तीव्र प्रतिक्रिया को सक्षम किया।

जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल और सामाजिक-आर्थिक स्थिति

स्वास्थ्य के संदर्भ में आयु एक महत्वपूर्ण संकेतक है इसलिए यह इस अध्ययन में आवश्यक चरों में से एक है। वर्तमान अध्ययन में प्रजनन आयु की महिलाओं पर विचार किया गया है क्योंकि इस अवधि के दौरान महिलाओं को विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से जूझना पड़ता है। मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं को विशेष रूप से स्वास्थ्य समस्याओं का खतरा अधिक होता है। इसके अलावा , केवल उन उत्तरदाताओं का चयन किया गया है जिनके छह महीने से पांच साल के बीच के बच्चे थे। चिकित्सा मानकों के अनुसार महिलाओं की प्रजनन आयु 15 से 45 वर्ष के बीच मानी जाती है। अध्ययन के दौरान यह बताया गया कि कुछ उत्तरदाताओं की पहली गर्भावस्था 16 से 17 वर्ष के बीच थी जिसका उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। प्रारंभिक गर्भावस्था न केवल महिलाओं के स्वास्थ्य की स्थिति को बुरी तरह प्रभावित करती है बल्कि उनके पोषण की स्थिति पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है। इसके अलावा, एक महिला की उम्र और स्वास्थ्य की स्थिति उसकी प्रजनन क्षमता को दर्शाती है। उपलब्धता की कमी और पर्याप्त स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक पहुंच के कारण झुग्गी -झोपड़ियों में रहने वालों की स्थिति और खराब हो जाती है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

तालिका 1 उत्तरदाताओं का आयु-वार वितरण

मलिन बस्तियाँ	आयु सीमा	आवृत्ति (n = 200)	प्रतिशत (%)
चिनहट बाजार स्लम	15-19	04	8
	20-24	11	22
	25-29	13	26
	30-34	10	20
	35-39	06	12
	40-45	06	12
सिकंदर नगर स्लम	15-19	01	2
	20-24	12	24
	25-29	10	20
	30-34	14	28
	35-39	08	16
	40-45	05	10
राजाजीपुरम स्लम	15-19	06	12
	20-24	13	26
	25-29	14	28
	30-34	08	16
	35-39	05	10
	40-45	04	8
विकास नगर स्लम	15-19	05	10
	20-24	13	26
	25-29	11	22
	30-34	12	24
	35-39	05	10
	40-45	04	8

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(6), 129-146
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

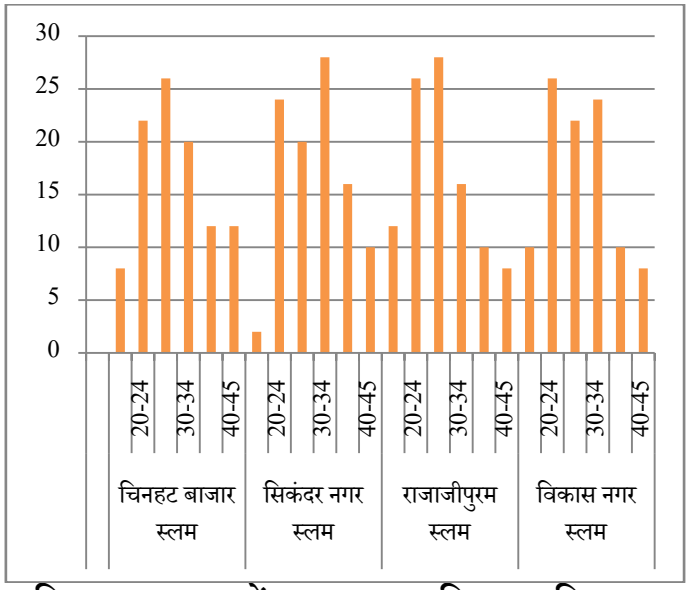

चित्र 1 उत्तरदाताओं का आयु-वार वितरण प्रतिशतता

तालिका 1 से पता चलता है कि राजाजाजीपुरम स्लम और विकास नगर स्लम के उत्तरदाता तुलनात्मक रूप से 15 से 34 वर्ष की आयु के बीच के युवा थे। चिनहट बाजार स्लम और सिकंदर नगर स्लम में उत्तरदाताओं की आयु काफी हद तक 20 से 44 वर्ष की आयु के बीच थी। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है , केवल उन महिलाओं को अध्ययन के लिए चुना गया है जिनके 5 वर्ष तक के बच्चे थे और इसलिए डेटा स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि कुछ उत्तरदाताओं ने अपने पहले बच्चे को 15 से 19 वर्ष के बीच जन्म दिया। आचार्य (2008) ने सूरत में शहरी झुग्गी बस्तियों के अपने अध्ययन में खुलासा किया है कि इन इलाकों में रहने वाली महिलाओं की पहली डिलीवरी 19 साल की उम्र में हुई थी। क्षेत्र सर्वेक्षण के दौरान यह सामने आया कि प्रारंभिक गर्भावस्था के परिणामस्वरूप बाल मृत्यु दर के साथ -साथ गर्भपात भी हुआ और बाद के अध्यायों में इसका विस्तार से वर्णन किया गया है। इस प्रकार, आयु और स्वास्थ्य परस्पर जुड़े हुए हैं और अध्ययन के महत्वपूर्ण चरों में से एक है।

वर्तमान अध्ययन में उत्तरदाताओं का बहुमत (86.5 प्रतिशत) एकल परिवारों में रह रहा था , जबकि केवल 13.5 प्रतिशत उत्तरदाता संयुक्त परिवारों में रह रहे थे। फील्डवर्क के दौरान यह पाया गया कि सर्वेक्षण की गई मलिन बस्तियों में संयुक्त परिवार में आमतौर पर एक या दो आश्रित सदस्य होते हैं जैसे कि माता , पिता, सास आदि उनके साथ रहते हैं। उल्लेखनीय रूप से मलिन बस्तियों में एकल परिवारों की अधिक संख्या ने सुझाव दिया कि वित्तीय संसाधनों की कमी और कम आय के परिणामस्वरूप परिवारों का विघटन हुआ। इसका उनके बच्चों के पालन-पोषण पर प्रभाव पड़ा क्योंकि कई उत्तरदाता अपने परिवार को आर्थिक रूप से समर्थन देने के लिए घर से बाहर काम करते हैं और फलस्वरूप बच्चे घर पर अकेले रह जाते हैं और उनकी देखभाल करने वाला कोई नहीं होता है। यह लंबे समय में उनके बच्चों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालता है।

तालिका 2 परिवार का प्रकार

परिवार का प्रकार	**आवृत्ति (n=200)**	**प्रतिशत (%)**
एकल परिवार	173	86.5
संयुक्त परिवार	27	13.5

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

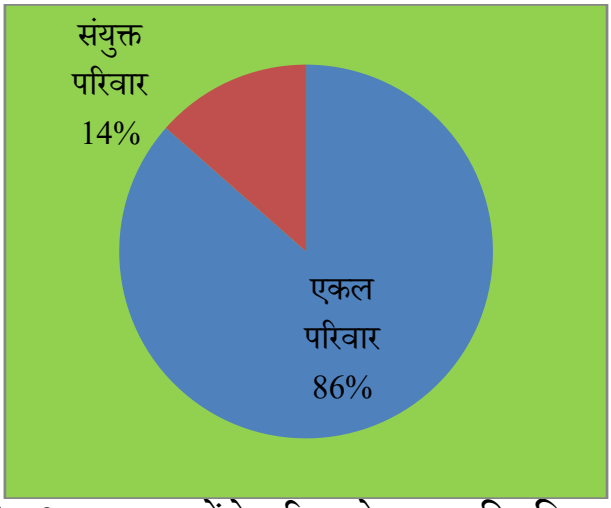

चित्र 2: उत्तरदाताओं के परिवार के प्रकार की प्रतिशतता

तालिका 3 परिवार के सदस्यों की संख्या

मलिन बस्ती	परिवार के सदस्यों की संख्या	आवृत्ति (n=200)	प्रतिशत(%)
चिनहट बाजार स्लम	1 से 4	11	22
	5 से 8	37	74
	9 और उससे अधिक	2	4
सिकंदर नगर स्लम	1 से 4	13	26
	5 से 8	33	66
	9 और उससे अधिक	4	8
राजाजीपुरम स्लम	1 से 4	07	14
	5 से 8	40	80
	9 और उससे अधिक	3	6
विकास नगर स्लम	1 से 4	09	18
	5 से 8	35	70
	9 और उससे अधिक	6	12

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(6), 129-146
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

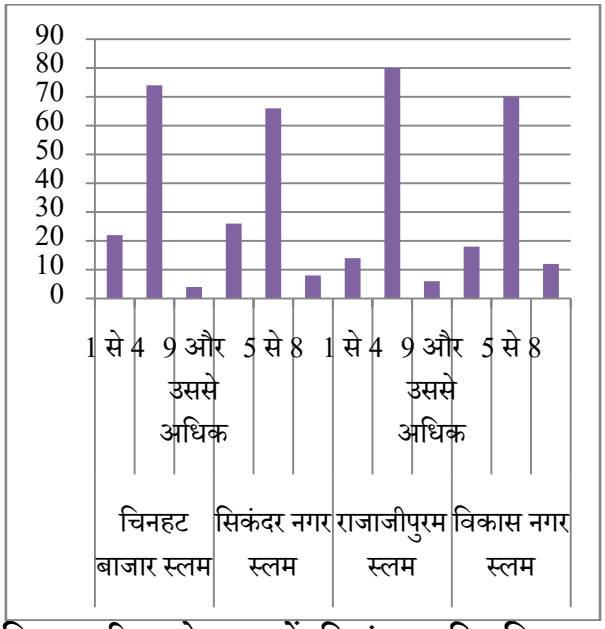

चित्र 3 परिवार के सदस्यों की संख्या की प्रतिशतता

तालिका 3 से यह स्पष्ट है कि अधिकांश परिवारों में परिवार के सदस्यों की संख्या 5-8 के बीच थी। चिनहट बाजार स्लम में , 74 प्रतिशत घरों में परिवार का आकार 5-8 के बीच था जबकि सिकंदर नगर स्लम में आधे से अधिक परिवार के सदस्य 5-8 के बीच थे। राजाजीपुरम स्लम और विकास नगर स्लम में भी कमोबेश यही स्थिति थी। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि अधिकांश परिवारों के परिवार का आकार बड़ा था जिसका अर्थ है उच्च निर्भरता अनुपात। कम आय और खराब वित्तीय संसाधनों के साथ परिवार के प्रत्येक सदस्य की बुनियादी जरूरतों को पूरा करना काफी मुश्किल हो जाता है। महिलाएं सबसे ज्यादा पीड़ित हैं क्योंकि उनकी जरूरतों पर कम से कम ध्यान दिया जाता है। परिणामस्वरूप मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाओं को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं तक पहुंच नहीं होती है, जिसका उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक कारकों में से एक माना जाता है जो व्यक्ति के व्यवहार , दृष्टिकोण और धारणा को प्रभावित करता है। इसके अलावा , यह किसी भी देश में मानव पूंजी विकास का सबसे महत्वपूर्ण संकेतक भी है। चित्र 5.6 उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर के आधार पर उनके प्रतिशत वितरण को दर्शाता है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

तालिका 4 उत्तरदाताओं की शिक्षा के स्तर

मलिन बस्ती	स्तर	आवृत्ति (n=200)	प्रतिशत(%)
चिनहट बाजार स्लम	निरक्षर	39	78
	प्राथमिक शिक्षा	9	18
	माध्यमिक शिक्षा	2	4
सिकंदर नगर स्लम	निरक्षर	34	68
	प्राथमिक शिक्षा	15	30
	माध्यमिक शिक्षा	1	2
राजाजीपुरम स्लम	निरक्षर	29	58
	प्राथमिक शिक्षा	18	36
	माध्यमिक शिक्षा	3	6
विकास नगर स्लम	निरक्षर	41	82
	प्राथमिक शिक्षा	8	16
	माध्यमिक शिक्षा	1	2

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण

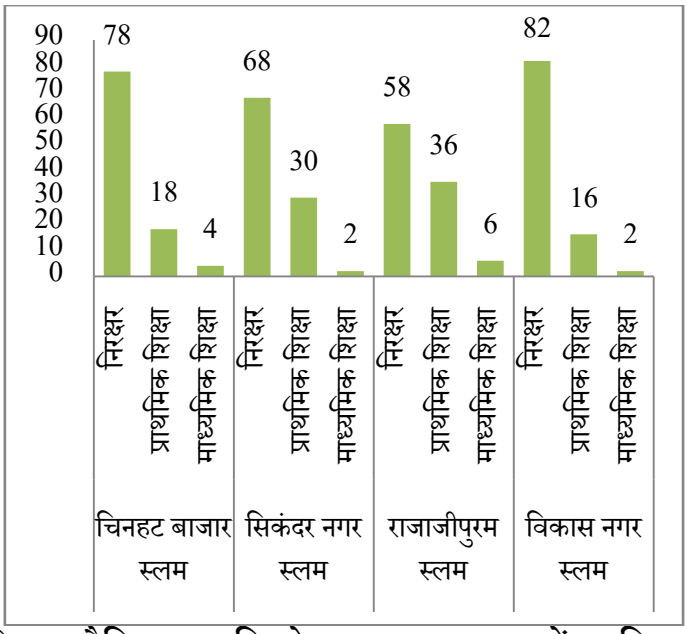

चित्र 4: शैक्षिक उपलब्धि के अनुसार उत्तरदाताओं का वितरण

चित्र 4 दर्शाता है कि मलिन बस्तियों में उत्तरदाताओं की शैक्षिक उपलब्धि आश्चर्यजनक रूप से कम है। झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाली महिलाओं के एक बड़े हिस्से के पास बहुत कम या बिल्कुल भी शिक्षा नहीं थी और इससे पता चलता है कि झुग्गी -झोपड़ी में रहने वाली महिलाओं की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर खराब है। लगभग 71.5 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर थे जो शहरी क्षेत्रों में शैक्षिक असमानता को दर्शाता है। विकास नगर स्लम और चिनहट बाज़ार स्लम में स्थिति बदतर थी जिसमें क्रमशः 82 प्रतिशत और 78 प्रतिशत उत्तरदाता निरक्षर थे। इसके अलावा, यह दर्शाता है कि महिला साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से काफी कम है। शैक्षिक प्राप्ति का निम्न स्तर सीधे

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

तौर पर मलिन बस्तियों में महिलाओं की खराब स्वास्थ्य स्थिति से जुड़ा है। चूंकि अधिकांश उत्तरदाता निरक्षर थे , उनके पास स्वास्थ्य जागरूकता और चेतना का निम्न स्तर था जोन केवल उनके स्वास्थ्य के लिए बल्कि उनके बच्चों के स्वास्थ्य के लिए भी हानिकारक है।

जीर्ण-शीर्ण स्थिति में झुग्गी -झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को न्यूनतम बुनियादी सुविधाओं के साथ जीवित रहना पड़ता है। खराब वित्तीय स्थिति के कारण , झुग्गीवासियों के लिए अपने बच्चों की शिक्षा , स्वास्थ्य, पोषण संबंधी आवश्यकताओं और जीवन के अन्य आवश्यक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना मुश्किल हो जाता है। इन मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मलिन बस्तियों में रहने वाली महिलाएं भी अपने घर की आय में योगदान करने के लिए बाहर काम करती हैं। वे खुद को विभिन्न प्रकार की आय -सृजन गतिविधियों में संलग्न करते हैं जैसे कि वे घरेलू नौकर , दिहाड़ी मजदूर, स्वरोजगार (चाय की दुकान , सड़क विक्रेता, सब्जी विक्रेता, आदि) के रूप में काम करते हैं।

तालिका 5: उत्तरदाताओं की रोजगार की स्थिति

मलिन बस्ती	रोजगार की स्थिति	आवृत्ति (n=200)	प्रतिशत(%)
चिनहट बाजार स्लम	गृहिणी	23	46
	कार्यरत	27	54
सिकंदर नगर स्लम	गृहिणी	21	42
	कार्यरत	29	58
राजाजीपुरम स्लम	गृहिणी	17	34
	कार्यरत	33	66
विकास नगर स्लम	गृहिणी	13	26
	कार्यरत	37	74

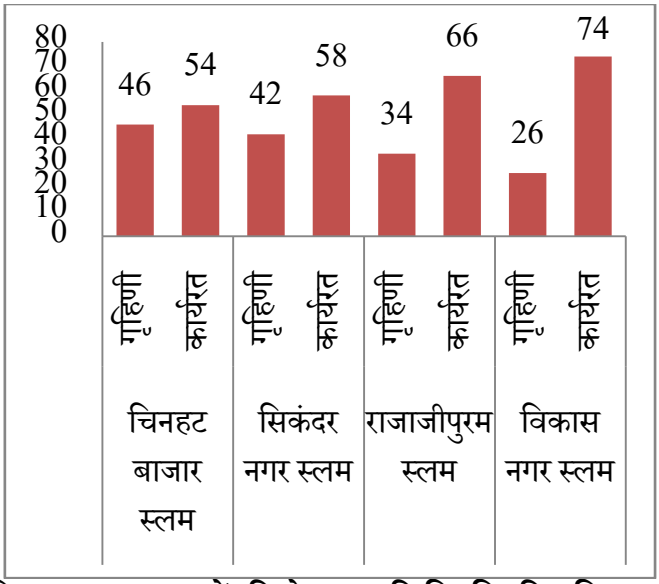

चित्र 5: उत्तरदाताओं की रोजगार की स्थिति की प्रतिशतता

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

चित्र 5 में यह देखा जा सकता है कि चिनहट बाजार स्लम (54 प्रतिशत) और सिकंदर नगर स्लम (58 प्रतिशत) में लगभग आधे उत्तरदाता कार्यरत थे, जबकि राजाजीपुरम स्लम (66 प्रतिशत) और विकास नगर स्लम (74 प्रतिशत) बहुसंख्यक थे। उत्तरदाताओं के काम कर रहे थे। कुल मिलाकर , सभी चार मलिन बस्तियों में 63 प्रतिशत उत्तरदाता काम कर रहे थे। यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि घरेलू आय में महिलाओं का योगदान काफी महत्वपूर्ण है। हालांकि, इसका मतलब यह नहीं है कि महिलाओं के बीच रोजगार का उच्च प्रतिशत निर्णय लेने में उनकी भागीदारी को बढ़ाता है। क्षेत्र के अनुभवों से यह कहा जा सकता है कि समाज में किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करने में लिंग एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अध्ययन क्षेत्र में यह देखा गया है कि परिवार में आर्थिक योगदान के बावजूद, महिलाएं अधीन थीं और उनके घर में माध्यमिक स्थिति थी। यहां तक कि उनके स्वास्थ्य और उनके बच्चों के स्वास्थ्य से संबंधित निर्णय भी परिवार के पुरुष सदस्यों द्वारा लिए जाते थे।

तालिका 6: उत्तरदाताओं के व्यावसायिक पैटर्न

मलिन बस्ती	व्यवसाय	आवृत्ति (n=200)	प्रतिशत
चिनहट बाजार स्लम	घरेलू नौकर	26	52
	दिहाड़ी मजदूर	5	10
	स्व नियोजित	19	38
सिकंदर नगर स्लम	घरेलू नौकर	29	58
	दिहाड़ी मजदूर	11	22
	स्व नियोजित	10	20
राजाजीपुरम स्लम	घरेलू नौकर	32	64
	दिहाड़ी मजदूर	6	12
	स्व नियोजित	12	24
विकास नगर स्लम	घरेलू नौकर	34	68
	दिहाड़ी मजदूर	5	10
	स्व नियोजित	11	22

स्रोत: फील्ड सर्वेक्षण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

International Journal of Economic Perspectives,*16*(6), 129-146
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

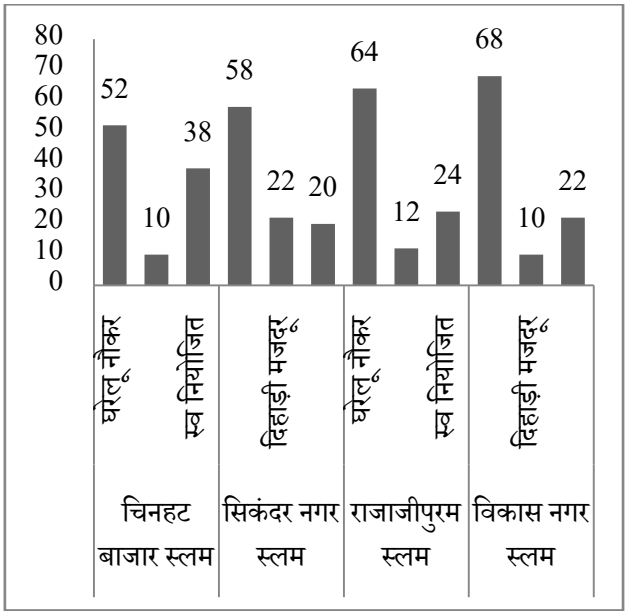

चित्र 6: उत्तरदाताओं के व्यावसायिक पैटर्न की प्रतिशतता

तालिका 6 सभी चार मलिन बस्तियों में कामकाजी महिलाओं के व्यावसायिक पैटर्न से संबंधित है। तालिका से स्पष्ट है कि अधिकांश उत्तरदाता अन्य घरों में घरेलू नौकर के रूप में कार्य कर रहे थे। कुछ उत्तरदाता दिहाड़ी मजदूर के रूप में भी काम कर रहे थे, जबकि उनमें से कुछ अपने स्वयं के चाय स्टालों, छोटी वेंडिंग दुकानों आदि के साथ स्वरोजगार कर रहे थे। झुग्गीवासियों की आर्थिक स्थिति उनकी सामाजिक और स्वास्थ्य स्थिति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वर्तमान अध्ययन से पता चला है कि चारों मलिन बस्तियों में परिवारों की आर्थिक स्थिति दयनीय थी, जिसका सीधा प्रभाव उनकी सामाजिक और स्वास्थ्य स्थिति पर पड़ा। हालांकि, यह पाया गया कि जिन परिवारों में महिलाएं काम कर रही थीं , वहां उन परिवारों की तुलना में बेहतर वित्तीय स्थिति थी जहां महिलाएं काम नहीं कर रही थीं। कविरासु और जेवियर (2015) ने अपने अध्ययन में कहा है कि निस्संदेह , महिलाओं की वित्तीय स्वतंत्रता, विशेषकर माताओं की उनके स्वास्थ्य के साथ -साथ उनके बच्चों के स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता के साथ निकटता से जुड़ा हुआ है। इस अध्ययन में यह स्पष्ट रूप से चित्रित किया जा सकता है कि महिलाओं को पैसा कमाने के लिए दूसरों के घरों में घर के काम करने के लिए लंबे समय तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है। हालांकि , अधिकांश उत्तरदाताओं द्वारा यह बताया गया था कि लंबे समय तक काम करने के बावजूद उन्हें कम भुगतान किया जा रहा था।

जैसा कि ऊपर कहा गया है, महिलाएं अपने घर की आय में महत्वपूर्ण योगदान दे रही थीं और इस प्रकार, घर की मासिक आय में महिला सदस्यों की आय के साथ परिवार के मुखिया की आय शामिल थी। यह अस्तित्व के लिए उनके संघर्ष में परिवार के संयुक्त प्रयास को दर्शाता है। इसके अलावा , यह अध्ययन झुग्गी बस्तियों में रहने वालों पर केंद्रित है जिन्हें आमतौर पर समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के रूप में माना जाता है। इसलिए , परिवारों की आर्थिक स्थिति का आकलन करने के लिए आय महत्वपूर्ण संकेतकों में से एक है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

तालिका 7: परिवारों की मासिक आय

मलिन बस्ती	मासिक आय	आवृत्ति (n=200)	प्रतिशत (%)
चिनहट बाजार स्लम	2000-4000	17	34
	4001-6000	26	52
	6001-8000	6	12
	8000 से अधिक	1	2
सिकंदर नगर स्लम	2000-4000	13	26
	4001-6000	28	56
	6001-8000	7	14
	8000 से अधिक	1	2
राजाजीपुरम स्लम	2000-4000	15	30
	4001-6000	27	54
	6001-8000	4	8
	8000 से अधिक	4	8
विकास नगर स्लम	2000-4000	18	36
	4001-6000	28	56
	6001-8000	3	6
	8000 से अधिक	1	2

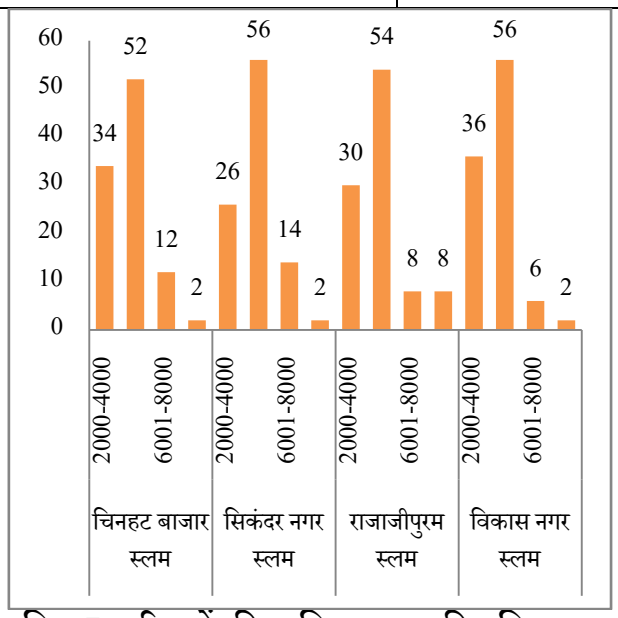

चित्र 7: परिवारों की मासिक आय की प्रतिशतता

चित्र 7 इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि सभी चार झुग्गियों में परिवार की अधिकांश आय 4001-6000 रुपये के बीच थी। इसके विपरीत , केवल 4 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 8000 रुपये से अधिक थी।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

इसके अलावा, 32 प्रतिशत परिवारों की मासिक आय 2000-4000 रुपये के बीच थी। आय के ये निम्न स्तर मलिन बस्तियों में रहने वाले परिवारों की खराब कमाई की स्थिति को दर्शाते हैं। इस प्रकार, हम परिवारों को उनकी आय, निम्न आय वर्ग (2000-4000 रुपये), मध्यम आय समूह (4000-6000 रुपये) और उच्च आय समूह (6000 रुपये से अधिक) के आधार पर तीन समूहों में वर्गीकृत कर सकते हैं। आंकड़ों के विश्लेषण से पता चला कि सभी चार मलिन बस्तियों में अधिकांश परिवार मध्यम आय वर्ग के थे। इसलिए , यह कहा जा सकता है कि सभी चार मलिन बस्तियों में आय परिवारों की बुनियादी जरूरतों को पूरा करने के लिए अपर्याप्त थी। परिवार जीर्ण-शीर्ण वातावरण में रहने के लिए बाध्य थे जिसका सीधा प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ा। ऑस्कर लुईस की गरीबी की संस्कृति की अवधारणा यहां स्पष्ट है क्योंकि व्यक्ति बहुत कम मात्रा में धन पैदा कर रहे थे और साथ ही बदले में बहुत कम प्राप्त कर रहे थे।

निष्कर्ष

इस अध्याय में उत्तरदाताओं से संबंधित प्राथमिक सूचनाओं का विश्लेषण किया गया है। चयनित स्लम क्षेत्रों में उत्तरदाताओं का साक्षरता स्तर बहुत कम पाया गया और यह उनके स्वास्थ्य और स्वच्छता के बारे में जागरूकता की कमी के साथ जटिल रूप से जुड़ा हुआ है। मलिन बस्तियों के निवासियों को आमतौर पर कम आय में माना जाता है और सर्वेक्षण की गई मलिन बस्तियों में स्थिति कमोबेश इसी तरह की होती है। अधिकांश परिवार वित्तीय संकट का सामना कर रहे थे और परिणामस्वरूप , गंभीर बीमारी में वे चिकित्सा उपचार के उच्च खर्च का सामना करने में विफल रहे। हालाँकि , इस अध्ययन में सर्वेक्षण में शामिल अधिकांश महिलाएँ अपने परिवार को आर्थिक रूप से सहारा देने के लिए भी काम कर रही थीं। नमूना किए गए परिवारों के एक उच्च अनुपात में मासिक आय 6,000/- रुपये से कम होने की सूचना है , जो कि मलिन बस्तियों में परिवारों के औसत आकार को देखते हुए बहुत कम प्रतीत होती है। कुछ परिवारों की हालत ऐसी थी कि उनके लिए एक दिन में दो वक्त के खाने का भी इंतजाम करना मुश्किल हो रहा था इस प्रकार , इस स्थिति में यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट है कि चिकित्सा उपचार की उच्च लागत उनकी पहुंच से बाहर थी।

सन्दर्भ

1. डेविस, एम. (2006). प्लेनेट ऑफ़ स्लुम्स . लंदन: वर्सो पब्लिशर.
2. यूएन-हैबिटेट (2003)। द चैलेंज्स ऑफ़ सलुम : ग्लोबल रिपोर्ट ऑन ह्यूमन सेटलमेंट 2003। लंदन: अर्थस्कैन पब्लिकेशंस लिमिटेड।
3. चंद्रमौली, सी. (2003). स्लुम्स इन चेन्नई: ए प्रोफाइल. प्रोसीडिंग ऑफ़ द थर्ड इंटरनेशनलकॉन्फ्रेंस ऑन एनवायरनमेंट एंड हेल्थ . डेप्ट ऑफ़ जियोग्राफी , यूनिवर्सिटी ऑफ़ मद्रास एंड फैकल्टी ऑफ़ एनवायरनमेंट स्टडीज, यॉर्क यूनिवर्सिटी, चेन्नई.
4. चौहान, एन.टी., त्रिवेदी, ए.वी., खान, आई.क्यू., एंड तलसानिया , एन.जे. (2011) प्रिवेलेन्स ऑफ़ क्लीनिकल विटामिन ए डेफिशियेंसी अमंग प्राइमरी स्कूल चिल्ड्रेन इन अर्बन स्लुम्स ऑफ़ अहमदाबाद : ए क्रॉस सेक्शनल स्टडी। जर्नल ऑफ़ क्लिनिकल एंड डायग्नोस्टिक रिसर्च, 5(8), 1627-1630।
5. तबस्सुम, एच. (2011). स्लम इन इंडिया . नई दिल्ली: एबीडी पब्लिशर्स.
6. बादामी, एस.वी., दीवानजी, एस., विजयकृष्ण, के., भंडारकर, एन., चिनगुडी, एस., हेरुर, ए., शशिकला, जी.वी., पाटिल, एस., एंड अंकड , आर. (2012)। न्यूट्रिशनल स्टेटस ऑफ़ अंडर-फाइव चिल्ड्रन इन अर्बन स्लम ऑफ़ बागलकोट मीडिया इंनोवाटिका , 1(2), 28- 34.

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव**
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

7. कुलकर्णी, आर.एन. अंजनाया, एस., एंड गुजर, आर. (2004) ब्रीस्टफीडिंग प्रैक्टिसेज इन एन अर्बन कम्युनिटी ऑफ़ कलंबोली , नवी मुंबई। इंडियन जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन , XXIX(4), 179-180।
8. कैरोलिन, एम। एंड यात्ज़िमिस्र्की, एस। (2013)। धारावी: फ्रॉम मेगा-स्लम टू अर्बन परदिगं। नई दिल्ली : रूटलेज
9. गोस्वामी, एस., एंड मन्ना, एस. (2013)। अर्बन पुअर लिविंग इन स्लुम्स : ए केस स्टडी ऑफ़ रायपुर सिटी इन इंडिया। ग्लोबल जर्नल ऑफ ह्यूमन सोशल साइंस सोशियोलॉजी एंड कल्चर, 13(4)।
10. चिन्नाकली, पी., उपाध्याय, आर.पी., शौकीन, डी., सिंह, के., कौर, एम., सिंह, ए.के., गोस्वामी, ए., यादव, के., एंड पांडव, सी.एस. (2014)। इफ़ेक्ट ऑफ़ सोसिओ -इकनोमिक डिप्रेंटिअल ऑन ग्रोथ एंड डेवलपमेंट ऑफ़ चिल्ड्रन इन फाइव मेट्रोपोलिटन सिटीज ऑफ़ इंडिया। जर्नल ऑफ़ हेल्थ, पापुलेशन एंड न्यूट्रिशन, 32(2), 227-236।
11. सज्जाद, एच. (2014)। लिविंग स्टैण्डर्ड एंड हेल्थ प्रोब्लेम्स ऑफ़ लैसर फॉर्चुनेट स्लम ड्वेलर्स : एविडेंस फ्रॉम एन इंडिया सिटी। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायरनमेंट प्रोटेक्शन एंड पालिसी , 2(2), 54-63।
12. मिरेकल, पी।, रूथ, वी.एम., ग्लोरी, ए.एम., एंड जॉनसन, एम.ई.सी. (2015) वूमेन इन स्लम दियर हेल्थ, इकॉनमी एंड एनवायर्नमेंटल एस्पेक्ट्स। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ करंट रिसर्च, 7(6), 17264-17268।
13. पटेल, डी.वी., बंसल, एस.सी., निंबालकर, ए.एस., पाठक, ए.जी., निंबालकर, एस.एम., एंड देसाई, आर.जी. (2015)। ब्रैस्टफीडिंग प्रैक्टिसेज , डेमोग्राफिक वेरिएबल्स , एंड दियर एसोसिएशन विथ मोर्बिडिटीज इन चिल्ड्रन। एडवांसेज इन प्रिवेंटिव मेडिसिन, 2015,
14. मारीमुथु, पी., कनमनी, टी.आर., एंड सौम्या , के. (2016)। इफ़ेक्ट ऑफ़ सोसिओ - इकनोमिक डिफरेंशियल ऑन ग्रोथ एंड डेवलपमेंट ऑफ़ चिल्ड्रेन इन फाइव मेट्रोपोलिटन सिटीज ऑफ़ इंडिया। इंडियन जर्नल ऑफ चाइल्ड हेल्थ, 3(2), 129-132।
15. दासगुप्ता, ए., सरकार, के., चौधरी, आर., रे, ए., एंड शाहबाबू , बी. (2016)। अनामिया एंड इट्स डेटर्माइंड अमंग वूमेन ऑफ़ रिप्रोडक्टिव ऐज ऑफ़ ए स्लम इन कोलकाता:।जर्नल ऑफ़ फ़ैमिली मेडिसिन एंड प्राइमरी केयर, 5(2), 276-280।
16. रहमान, एस.जे., एंड मेधी, ए.एच. (2017) यूटिलाइजेशन ऑफ़ अंतंतल सर्विसेज इन अर्बन स्लुम्स ऑफ़ जोरहाट म्युनिसिपेलिटी , असम, इंडिया एंड द सोसिओ - डेमोग्राफिक फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग इट। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड पब्लिक हेल्थ, 4(1), 129-133.
17. घाने, वी.आर., एंड कुमार, आर. (2017) न्यूट्रिशनल स्टेटस ऑफ़ अंडर - फाइव चिल्ड्रन ऑफ़ मुंबई सबअर्बन रीजन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च इन मेडिकल साइंसेज, 5(7), 3190-3196।
18. अलाज़ी डीए, अगाना जीए (2020) अंडरस्टैंडिंग द स्लम -हेल्थ कुण्ड्रम इन सब -सहारन अफ्रीका: ए प्रपोजल फॉर ए राइट - बेस्ड एप्रोच टू हेल्थ प्रमोशन इन स्लुम्स। ग्लोब हेल्थ प्रमोशन। 2020; 27(3):65-72.
19. फरहाद नोसराती नेजाद एट अल। (2021) "द मोस्ट इम्पोर्टेन्ट सोशल डिटरमिनेंट्स ऑफ़ स्लम डवेलर्स हेल्थ: ए स्कोपिंग रिव्यू", जे प्रीव मेड पब्लिक हेल्थ। 2021 जुलाई; 54(4): 265-274.

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव**
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022

20. सुडोडा पोंगुट्टा एट अल। (2021) "द सोशल इम्पैक्ट ऑफ़ द कोविड -19 आउट ब्रेक ऑन अर्बन स्लुम्स एंड द रिस्पांस ऑफ़ सिविल सोसाइटी आर्गेनाईजेशन : ए केस स्टडी इन बैंकॉक , थाईलैंड", खंड 7, अंक 5, मई 2021, e07161
21. आचार्य, ए. (2008) एक्सेस एंड यूटिलाइजेशन ऑफ़ हेल्थ केयर सर्विसेज इन अर्बन लोविन्कम सेटलमेंट्स इन सूरत, इंडिया. सूरत: सेंटर फॉर सोशल स्टडीज।
22. कविरासु, एस.जे., एंड जेवियर , जी.जी. (2015)। स्टेटस ऑफ़ वूमेन हेल्थ इन अर्बन सबस्टैंडर्ड सेट्लमेंट्स ऑफ़ चेन्नई , तमिलनाडु स्टेट , इंडिया। यूरोपियन एकेडेमिक रिसर्च , II(11), 14473-14483।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author: **उमेश चन्द्र पाण्डेय and डॉ आशीष यादव**
Submitted: 27 Feb 2022, Revised: 09 March 2022, Accepted: 18 May 2022, Published: June 2022